गैलीलियो व न्यूटन जैसे असाधारण प्रतिमा के धनी वैज्ञानिकों के सिद्धान्तों से विज्ञान जगत में अनेक क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए जिसने विश्व की वर्तमान आश्चर्यजनक शिल्प वैज्ञानिक संरचना की नींव डाली। सोलहवीं व सत्रहवीं सदियों की कला पर इन सभी परिवर्तनों का अभूतपूर्व प्रभाव पड़ा। निसर्ग व मानव के अन्योन्याश्रय के ज्ञान से कला के बाह्य रूप में परिवर्तन आ गया व वह अधिक नैसर्गिक बन गयी। पुनरुत्थान काल में मानवाकृतियों को ही सर्वस्व मान कर उसको बिल्कुल स्पष्टता व श्रेष्ठता से चित्रित किया जाता था व पृष्ठभूमि का निसर्ग चित्रण अस्पष्ट व नाम मात्र का होता था बरोक कला में अब ऐसे भी चित्र देखने को मिलने लगे जिसमे निसर्ग को प्रमुख महत्व देकर, उनको अनन्त आकाश की गहराई मे अंकित किया हो व जिसमें मानवता का पुट देने के उद्देश्य छोटी व अस्पष्ट मानवाकृतियाँ हो।

लिओनार्दो के चित्र 'मोनालिसा' व ज्योर्जिओन के चित्र "वन विहार" की तुलना पुसँ, क्लोदलोरँ व राइस्डाल के दृश्य चित्रों से करने पर यह बात स्पष्ट हो जाती है कलाकार रेम्ब्रांट के चित्रों मे भी गहरे अर्थात अंधकार युक्त अथाह गहराई कुशलता व से चित्रण हुआ है इसी प्रकार डच, चित्रकारों, द्वारा चित्रित चित्रो में बनाई गई खिड़कियों में से भी दिखाई देने वाला अन्दर और बाहर का आकाश दिखाया गया है। सारांश ये है कि बरोक कला मे चित्रों में आकाश को चित्रित किया जाने लगा अथवा चित्रों मे आकाश को-भी का महत्व बढ़ गया। आकाश का महत्व बढ़ते ही संयोजन पद्धति मे क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए। चित्रण करते समय चित्रकार चित्र मे किसी एक वस्तु या आकृति पर ही ध्यान देने के बजाय चित्र भार चित्र के सम्पूर्ण प्रभाव में उसकी भूमिका पर

ध्यान देने लगे। चित्र में गति व विकिरण का विचार आवश्यक होकर चित्र में कर्णवत रेखाओं का प्रादुर्भाव या प्रयोग होने लगा।

रोम में जन्मी बरोक कला का प्रमुख केन्द्र मुख्यत: रोम ही रहा। यूरोप के भिन्न - भिन्न देशों में निम्न प्रमुख बरोक चित्रकारों की गणना हम इस कर सकते हैं

'इटली' में 'गिवदो रेनी' व 'ला फ्रान्को' तथा उसके पश्चात अद्भुत प्रतिभा के सम्पन्न चित्रकार 'कारावद्ज्यो' व गवेर्चिनो, कावालीनो, फैति, ज्योर्दानो आदि बरोक चित्रकारों ने कला कार्य किया।

'फ्रांस' में चित्रकार 'वुए', लोरें, व रैफिल' व काराच्चि का अनुसरण किया। फिलिप, शाम्पेन्य आदि अन्य कलाकारों ने इस कला को अपना आदर्श मानकर उसका अनुसरण किया।

'हालैण्ड' में यथार्थ जीवन को काफी चित्रित किया गया जिसका दर्शन हमें "फ्रांस हाल्स के व्यक्ति चित्रों, वर्मेर के व राइस्डाल के चित्रों में होता है। इसके अलावा हालैण्ड में 'रेम्ब्रांट' जैसे विख्यात चित्रकार हुए। जिन्होंने व्यक्ति चित्र, आत्म चित्र, धार्मिक चित्र, प्रकृति चित्र, रेखांकन जैसी बहुआयामी कला निर्मित की।

'स्पेन' में रिबेरा, वेलास्केस, धुर्बारान व म्युरिलो ने विशेष ख्याति प्राप्त की इस प्रकार 'बरोक कला' समूचे यूरोप में प्रभाव शाली हुई।

—